पटियाला आज भी गाता है, "लजवाने, तेरा नाश जाइयो, तैने बड़े पूत खपाये”

आज से 115 वर्ष पूर्व 1898 में जीन्द राज्य के प्रसिद्ध गाँव लजवाना में भूरा और निघांईया दो जाट चौधरी बसते थे। मजदा और दुर्गा के बहकाने से जाट महाराजा जीन्द ने उन पर आक्रमण कर दिया। यह युद्ध छः महीने तक चला। भूरा और निघांईया की मदद चारों ओर की जटैत करती थी जो समय के अनुसार घटती, बढ़ती रहती थी । धन, जन की कभी कमी न रहती थी। भूरा और निघांईया अपने मातहत काम करने वालों को आठ रुपये महीना देते थे। तोपची को सोलह रुपये महीना। सात सौ हेड़ी (नायक राजपूत) उनकी फौज में तोपची का काम करते थे। गोला, बारूद, रसद उन्हें रिठाना, फड़वाल और खुडाली (किला जफरगढ़) के ठिकानों से पहुंचती थी। खुडाली में तो पुराने घरों में अब तक शोरा, गन्धक, पुरानी बन्दूक, गंडासे आदि बड़ी तादाद में खुदाई पर निकल आते हैं। इस युद्ध में पटियाला, नाभा, जीन्द {तीनों फूल सिंह संधू (फुलकिया जाटवंश) की रियासतें} राज्यों की बीस हजार से अधिक फौज काम आई थी। अंग्रेजी फौज ने आकर बड़ी कठिनाई से लजवाना को फतह किया था। आज भी पटियाला के देहात में बहनें यह गीत बड़े दर्द के साथ गाती हैं कि –

"लजवाने, तेरा नाश जाइयो, तैने बड़े पूत खपाये"

हरयाणा के स्वाभिमानी पुरुष अंग्रेजी राज्य की स्थापना के कितने विरुद्ध थे, यह उपर्युक्त घटना से अच्छी तरह ज्ञात हो जाता है । अन्त में भूरा और निघांईया पकड़े गये तथा उन्हें कालवा (जीन्द राज्य का प्रसिद्ध गांव) में फांसी पर लटका दिया गया । फांसी गांव के बाहर वृक्षों पर दी गई तथा सारे इलाके के लोगों को बुलाकर, जिससे अंग्रेज की दहशत सब पर छा जावे और कोई भी ब्रिटिश प्रभु के खिलाफ सिर न उठ सके ।

सम्पादक - स्वामी ओमानन्द सरस्वती